6 SEP 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL4**

Name: संदीप कुमार पटेल

Mobile Number:

Medium (English/Hindi): हिन्दी

Reg. Number: IP – 19 / 1330

Center & Date: Delhi, 05/09/19

UPSC Roll No. *(If allotted)*: 0867996

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाइएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये:
$10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

संदर्भ-प्रसंग - मनुष्य एवं सभ्यता के विकास के साथ धन मानव जीवन के केंद्र में आ गया है, इसी प्रसंग को इस गद्यांश में बताया गया है।

व्याख्या :- लेखक कहता है कि आज ज्ञान, सेवा भाव, कुल और जाति से अधिक महत्व धन की महत्ता का है। अपवादस्वरूप चाहे कभी इतिहास में एकाध बार आंदोलन के सामने धन का महत्व कम हो जाये, किंतु अधिकतर धन से व्यक्ति की श्रेष्ठता की तुलना होती है। जैसे जब कोई औरत यदि गरीब हो तो उसके साथ हेय व्यवहार एवं अमीर के साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) पूँजीवादी सभ्यता का विकृत रूप जहाँ धन ही श्रेष्ठ है। इसके विरोध में मार्क्स ने हिंसक क्रांति की वकालत की थी।

(2) प्रगतिवादी आंदोलनों में यशपाल, रांगेय राघव जैसे साहित्यकारों ने पूँजीवाद के इसी स्वरूप को उजागर किया है।

(3) तत्सम प्रधान भाषा उद्देश्य को स्पष्ट कर रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है! गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें!! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढ़े! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों के जनक 'फणिश्वरनाथ रेणु' के 'मैला आँचल' से लिया गया है।

प्रसंग- लेखक ने प्रकृति के साधारण स्वरूपों जैसे खेत, गेंहू के माध्यम से डॉक्टर प्रशांत के मन में ग्रामीण जीवन के प्रति संवेदना उत्पन्न की है।

व्याख्या- डॉक्टर प्रशांत समाज की सेवा करने के उद्देश्य से पहली बार किसी गाँव आया है, जहाँ वह प्रकृति के विविध स्वरूपों को देखकर मोहित होता है। इसके पहले वह कभी प्रकृति के कोमल स्वरूप जैसे कोयल की वाणी आदि से मोहित नहीं हुआ किंतु गाँव में गेंहूँ की सुनहरी फसल लहरा रही है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लोगों की स्वाभाविक दिनचर्या, जंगल, बाग, कमल के पत्ते, नदी आदि चीजें डॉक्टर के मन में मिठास पैदा करती हैं।

विशेष-

(1) अभिजात्य वर्ग के विपरीत प्रकृति के प्रदेश कहे जाने वाले तत्वों का वर्णन एवं इससे डॉक्टर के मन में आसक्ति

(2) यही दृष्टि नागार्जुन के काव्य में भी दिखती है।

(3) आंचलिक विशेषताओं का प्रवाहमयी भाषा में सुंदर वर्णन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश 'भारत दुर्दशा' नामक नाटक से लिया गया है जिसके लेखक हिन्दी के आरंभ पुरुष 'भारतेंदु हरिशचंद्र' है।

प्रसंग- इसमें लेखक ने भारत की दुर्दशा में निहित एक कारण 'अंधकार' की विशेषताओं का वर्णन किया है।

व्याख्या- अंधकार अपनी विशेषता बताते हुये कहता है कि हमारा जन्म सृष्टि के संहार के कारक तमोगुण भगवान से हुआ है। चोर, उल्लू हमें पसंद करते हैं। पर्वतों की गुफा, मूर्खों के मस्तिष्क में हमारा निवास है। हमारा प्रभाव ऐसा है कि हृदय, नेत्र और सब हमसे डर जाते हैं। हमारे आध्यात्मिक स्वरूप को ही अज्ञान एवं भौतिक स्वरूप को अंधकार कहा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जाता है।

विशेष

(1) 'अंधकार' ~~को~~ को मानवीय रूप में लाकर भारतेंदु ने भारत दुर्दशा की अभिव्यक्ति की है।

(2) नवजागरण की चेतना - अपनी समस्याओं का गहन विश्लेषण किया गया है।

(3) तत्सम खड़ी बोली

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी के उपन्यास महाभोज से अवतरित है।

प्रसंग - राजनीति में आने वाली समस्याओं के प्रति चेताया गया है।

व्याख्या - लेखिका राजनीति की तुलना साहित्य से करती हुई कहती हैं कि साहित्य की तुलना मे राजनीति निरंतर परिवर्तनशील है, जिसमें प्रत्येक पल का महत्व है अन्यथा हानि उठानी पड़ती है। राजनीतिक जीवन में सफल होने के लिये आवश्यक है कि व्यक्ति हमेशा अपने वातावरण के प्रति जागरूक रहे।

विशेष - (1) राजनीति को परिवर्तनशील

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं गंभीर बताया गया है जो वर्तमान में प्रासंगिक है।

(2) सरल एवं समास शैली में कथ्य का विश्लेषण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश प्रेमचंद के निबंध 'कविता के प्रतिमान' से लिया गया है। जिसका संकलन प्रो. सत्येन्द्र ने 'निबंध निलय' में किया है।

प्रसंग - कविता की जीवन में महत्वता का चित्रण किया गया है।

व्याख्या - प्रस्तुत गद्य में लेखक कविता की विशेषता बताते हुये कहते हैं कि कवित्व वह चित्र है जिससे भावुक संगीत का जन्म होता है। अंधकार का ज्ञान से, असत्य का सत्य से एवं बाहरी जगत का अंतर्मन से कविता ही मिलन कराती है।

विशेष

① 'कविता क्या है' निबंध में आचार्य शुक्ल ने भी कविता की तुलना भावयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से की है।

(2) कविता मानव जीवन को रव से मिलाती है - सृजन की प्रक्रिया का वर्णन अज्ञेय ने भी किया है।

(3) समास शैली एवं तत्सम भाषा

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

नई कहानी आंदोलन 1960 के दशक में भारत में शुरू हुआ जिसके केंद्र में व्यक्ति का खंडित व्यक्तित्व, शहरी मध्यवर्गीय जीवन से उत्पन्न वेदना आदि थी। किंतु कुछ कहानियों में यह संवेदना निम्न वर्ग तक भी पहुँची। अमरकांत की कहानी 'जिंदगी और जोंक' भी ऐसी ही कहानी है।

'जिंदगी और जोंक' की संवेदना का मूल आधार शहरी उच्च मध्यवर्गीय जीवन में निम्न वर्गीय एवं गरीब व्यक्ति के फंसने से उत्पन्न समस्या है। अमर-कांत ने स्पष्ट बताया है कि किस तरह 'रजुआ' की जिंदगी ही उसके लिए 'जोंक' बन गई अर्थात् उसके शोषण का कारण बनी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी में व्यक्ति केंद्र में होता है, इस आधार पर यह कहानी भी रजुआ के जीवन की व्यथा की स्थितियों का विश्लेषण करती हुई प्रतीत होती है। दरअसल 'रजुआ' एक गरीब एवं अनपढ़ लड़का था जो मोहल्ले में सबके छोटे-छोटे काम करके रोजी-रोटी का जुगाड़ करता था, किंतु धीरे-धीरे उसका शोषण बढ़ता गया और जब वह बीमार हुआ तो उसे किसी ने भी ठीक कराने की जरूरत नहीं समझी। लेखक कहता है - रजुआ की जिंदगी उसके लिये जोंक बन गई थी जो जब तक उसका पीछा नहीं छोड़ती ~~तब~~ जब तब उसका पूरा खून चूस न ले।

जिंदगी और जोंक के माध्यम से अमरकांत ने गरीब एवं निम्न वर्गों के प्रति संवेदना प्रकट की है। समाज में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्राय: ऐसे लोगों को उपभोग के लिये जरूरी समझकर उन्हें मरने के लिये छोड़ दिया जाता है। यही यथार्थ लेखक ने कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है।

स्पष्ट है कि इसी तरह प्रेमचंद ने अपनी कहानियों जैसे गुल्ली डंडा, दूध का दाम, कफन आदि में निम्न एवं असहाय वर्गों के प्रति संवेदना को प्रकट किया था, उसी का अगला चरण जिंदगी और जोंक है जहाँ यह शोषण अधिक यथार्थ रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

इस प्रकार 'नई कहानी' आंदोलन में अमरकांत का वैशिष्ट्य उनकी प्रयोगशीलता, संवेदनागत सूक्ष्मता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

एवं यथार्थ की अभिव्यक्ति के लिये महत्वपूर्ण है।

——— : ———

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी उपन्यास की विकासयात्रा में 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व के कारणों का निर्देश कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा 'परीक्षा गुरु' से शुरु होकर प्रेमचंद के यहाँ परिपक्व होते हुये वर्तमान तक की लंबी यात्रा करती है। इस यात्रा में मन्नू भंडारी का कालजयी उपन्यास 'महाभोज' अपनी प्रासंगिकता के लिये हमेशा प्रमुख बना रहेगा।

'महाभोज' उपन्यास 70 के दशक में हुये नरसंहार 'बेलछी कांड' की पृष्ठभूमि पर लिखा गया था किंतु इसमें मात्र दलित समस्या न होकर ~~तत्कालीन~~ तत्कालीन राजनीतिक अपंगुता, राजनीति का विकाऊपन, मीडिया का गैर जिम्मेदाराना चरित्र आदि समस्याओं को भी उकेरा गया है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'महाभोज' उपन्यास के महत्व की चर्चा निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर की जा सकती है -

(क) दलित वर्ग के प्रति समाज का मनोभाव एवं राजनीतिक स्वार्थपरायणता का प्रभावी चित्रण 'महाभोज' में किया गया है। 'बिंदा' की मौत सभी पार्टियों के लिये 'महाभोज' बन जाना भारतीय लोकतंत्र के समक्ष गंभीर चुनौती है।

(ख) राजनीति में दल-बदल की प्रक्रिया स्वार्थ के कारण विभिन्न नेताओं द्वारा किया जाना चिंता का विषय है। महाभोज की यह समस्या वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

(ग) 'दा साहब' जैसे द्वाध चरित्र के नेता जो एक ओर जनता के समक्ष 'औदात्य'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं न्याय की मूर्ति बने रहते हैं किंतु अपने स्वार्थ के लिये पुलिस एवं मीडिया को भी अपने पक्ष मे कर लेते हैं।

(घ) महाभोज ने मीडिया के बिकाऊ चरित्र को बखूबी उभारा है। वर्तमान समय मे यह समस्या अधिक देखी जाती है।

इसके अलावा बिसू से होते हुये 'मि. सक्सेना' तक जो क्रांति की चेतना प्रवाहित हुई है, वह महाभोज की संवेदना का मूल आधार है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में 'मल्लिका' के रूप में मोहन राकेश एक अविस्मरणीय चरित्र की सर्जना में कहाँ तक सफल सिद्ध हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मोहन राकेश आधुनिक भावबोध के रचनाकार हैं अतः उनके चरित्र आधुनिक स्थितियों के अनुसार ही होते हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में कालिदास, विलोम आदि चरित्र अस्तित्ववादी बिसंगति बोध से ग्रसित हैं किंतु मल्लिका के चरित्र में छायावादी प्रभाव नजर आता है।

मल्लिका एकमात्र चरित्र है जो अपने मूल्यों से समझौता नहीं करती है तथा उसके चरित्र में 'भारतीय नेता' के धीरोदात्त एवं औदात्य का प्रभाव एवं ग्रीक परंपरा के नायक की 'भद्रता' का प्रभाव नजर आता है।

मल्लिका अपने प्रेम के प्रति गंभीर औदात्य मूल्यों से युक्त है। उसके लिये प्रेम कोई जरूरत की चीज नहीं

Copyright – Drishti The Vision Foundation

बल्कि भावनाओं का सवाल है। उसे प्रेम में मात्र भावनाएँ चाहिये इसके लिये वह सर्वस्व बलिदान करने को तैयार है।

"मैं वास्तव में अपनी भावनाओं से प्रेम करती हूं, जो पवित्र हैं, कोमल हैं, अनश्वर हैं..।"

प्रेम का यह मूल्य प्लेटोनिक प्रवृति या छायावादी स्वभाव का है जहाँ ऐन्द्रिय सुख भोग की कामना नहीं होती।

मल्लिका दूसरों को अपने लिये उपयोग नहीं करना चाहती। वह कालिदास को हठपूर्वक उज्जियिनी भेजती है ताकि वह सफल हो सके भले ही वह उससे शादी न करे। प्रेम मे यह समर्पण मात्र मल्लिका मे दिखाई देता है।

मल्लिका के माध्यम से मोहन राकेश ने पीढ़ी गत अंतराल को भी प्रदर्शित किया है, जब वह अंत मे

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यथार्थ के कारण वेश्या बनने को विवश। होती है तो भी उसकी गरिमा कम नहीं होती क्योंकि उसे यह परिस्थितिवश करना पड़ा था।

हालाँकि मल्लिका का स्वयं को कालिदास को सौंप देना 'स्व' का त्याग करना है, इस दृष्टि से मल्लिका का वस्तुकरण हो जाता है अतः उसका जीवन भी अप्रामाणिक हो जाता है। किंतु अन्य चरित्रों की अपेक्षा मल्लिका का औचित्य कम नहीं होता है।

इस प्रकार 'आषाढ़ का एक दिन' में मल्लिका का चरित्र हिन्दी साहित्य को मोहन राकेश की अनुपम देन है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'प्रसाद की नाट्यभाषा उनके नाटकों की अभिनय-संभावनाओं को क्षरित करती है।' स्कंदगुप्त के आधार पर इस मत का परीक्षण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देशकाल, वातावरण और भाषा-शिल्प की दृष्टि से मैला आँचल की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'मैला आँचल' आंचलिक उपन्यासों की परंपरा में हिन्दी साहित्य की सर्वश्रेष्ठ कृति है। रेणु ने अपने उपन्यास में नाटक के प्रत्येक तत्वों जैसे देशकाल, वातावरण, संवाद, भाषा की दृष्टि से अनूठे प्रयोग किये हैं।

आंचलिक उपन्यास वह उपन्यास होता है जहाँ अंचल ही नायकत्व ग्रहण कर ले अतः इसके लिये उपन्यास में देशकाल एवं सघन वातावरण तथा देशज एवं आंचलिक भाषा की आवश्यकता होती है।

देशकाल एवं वातावरण

मैला आँचल बिहार के पूर्णिया जिले के एक गाँव की कथा है। ~~देशकाल~~ देशकाल के स्तर पर इसमें 1947 से 1952 के बीच का समय वर्णित किया गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एक महान उपन्यास वह होता है जो अपने देश काल की सीमाओं से बंधा न रहे। इस दृष्टि से यह उपन्यास की सीमा है किंतु रेणु ने अपने अंचल का वर्णन इस प्रकार किया है कि प्रत्येक पाठक खुद को इससे जोड़ पाता है।

उपन्यास में सघन वातावरण बनाये रखा गया है, इसके लिये प्रत्येक गली, मोहल्ले, जाति, व्यक्ति का रोचकता से वर्णन किया गया है। ठाकुर टोली, ततमा टोली, तंत्रिमा टोली, चमर टोली आदि स्थानों, समाजों का चित्रण अनुपम है।

रेणु ने प्रकृति के विभिन्न तत्वों के माध्यम से गाँव, मोहल्ला आदि का वर्णन तो किया ही है साथ मे फसलों, नदी, तालाबों आदि को भी चित्रित किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है–
"गेहूँ की सुनहरी बालियों से भरे हुए खेतों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में पुरवैया हवा लहरे पैदा करती है।"

भाषा

मैला आँचल में देशज, स्थानीय, आंचलिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। साथ में प्रवाह एवं रोचकता को बढ़ाने के लिये स्थानीय मुहावरों एवं प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग है। जैसे-

- कालीचरण ने काली किरिया किया है --
- गन्ही बाबा, सुराज

इन शब्दों के प्रयोग से मैला आँचल की आंचलिकता में चार चाँद लग जाते हैं। भाषा एवं ध्वनियों, गीतों का प्रयोग भी इसे अत्यंत रोचक बनाता है।

इस प्रकार मैला आँचल फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा रचित हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यास कहा जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भ्रष्टाचार की समस्या आधुनिक भारत मे व्याप्त गंभीर एवं विकट समस्या है जिसकी वजह से भारतीय लोकतंत्र ~~का~~ ~~को~~ को ~~समक्ष~~ प्राय: कई आलोचनाएँ झेलनी पड़ती है।

प्रस्तुत कहानी 'भोलाराम का जीव' सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार की सुदीर्घ परंपरा का पर्दाफाश करती है। एक आम कर्मचारी जब रिटायर्ड होता है तो पेंशन ही उसकी शेष जीवन का सहारा होती है किंतु भोलाराम की पेंशन, विभाग द्वारा अनुमोदित नहीं की गई और इसी चिंता में वह मर गया। इसके बाद भी विभाग ने पेंशन देना शुरू नहीं किया।

भ्रष्टाचार के अलावा यह कहानी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय कार्यपालिका की संवेदनहीनता को भी व्यक्त करती है, जहाँ एक गरीब परिवार जो साधारण आवश्यकताएँ भी पूरी करने में असमर्थ है; उसे रिश्वत देने के लिए विवश किया जाता है।

मिथकीय शिल्प के माध्यम से हरिशंकर परसाई ने भारतीय समाज के विद्रूप यथार्थ को पेश किया गया है। जाहिर है कि स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय नौकरशाही लोककल्याण की भावना से युक्त नहीं हो पाई एवं आम जन जीवन को कष्टों का सामना करना पड़ा।

भारत की कार्यपालिका भ्रष्टाचार में लिप्त रहकर जन साधारण की उपेक्षा करती रही, इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे - धीरे भ्रष्टाचार एक आवश्यक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

एवं सांस्कृतिक हिस्सा बन गया। आज यह समस्या अपनी जड़े सभी जगह फैला चुकी है।

स्पष्ट है कि 'भोलाराम का जीव' उस यथार्थ की ओर इशारा करती है जो भारत की कार्यपालिका पर एक धब्बे के समान है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

आचार्य शुक्ल ने अपने काव्यशास्त्रीय प्रतिमानों को 'कविता क्या है' निबंध के माध्यम से स्पष्ट किया है। इस निबंध में वे कविता की परिभाषा उसका प्रयोजन, कविता एवं मानव का संबंध, कविता में शिल्प आदि पक्षों की चर्चा करते हैं।

आचार्य शुक्ल कहते हैं कि मनुष्य सभ्यता के आवरण में फँसकर अपने 'स्व' को भूल जाता है, इसी स्व को जाग्रत कर मनुष्य के हृदय को खोलने के लिये मनुष्य जो शब्द विधान करता है उसे कविता कहा जाता है।

कविता की तुलना शुक्ल जी ने भाव योग से की है एवं इसे कर्मयोग व ज्ञान योग के समकक्ष बताया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मनुष्य और कविता का अंतर्संबंध बताते हुये वे कहते हैं कि विज्ञान, सभ्यता एवं विकास ने मनुष्य को भौतिक सुख दिया है किंतु आध्यात्मिक एवं मानसिक सुख भी अपेक्षित होता है इसके लिये साहित्य में कविता का महत्व है।

काव्य में अलंकारों के महत्व पर चर्चा करते हुये वे कहते हैं कि यद्यपि कविता में अलंकार से शोभा बढ़ती है किंतु जिस प्रकार एक कुरूप स्त्री आभूषण से लदकर सुंदर नहीं हो सकती उसी प्रकार कविता में अलंकार गुणों को नहीं बढ़ा सकते।

बिंब की महत्वता स्पष्ट करते हुये वे कहते हैं कि जिस प्रकार काव्य में अर्थग्रहण अपेक्षित होता है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसी प्रकार बिंब ग्रहण भी।

कविता में रस की लोकमंगलवादी व्याख्या करते हुये वे रस को साध्य मानते हैं किंतु रस के साथ लोकमंगल की भावना प्राथमिक होनी चाहिये। इसी आधार पर वे तुलसी के काव्य को लोकमंगल की साधनावस्था का काव्य बताते हैं।

इस प्रकार आचार्य शुक्ल ने अपने निबंध के माध्यम से काव्य के प्रतिमानों की सैद्धांतिक समीक्षा की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये:

$10 \times 5 = 50$

(क) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण हिन्दी के कालजयी उपन्यास 'गोदान' से लिया गया है इसके रचयिता 'प्रेमचंद' हैं।

प्रसंग- प्रस्तुत गद्य में होरी जीवन के अंतिम समय में अपनी जीवन की सभी महत्वपूर्ण प्रसंगों को बेतरतीब क्रम में याद कर रहा है।

व्याख्या- होरी जब अपनी अंतिम सांसे ले रहा है तो उसके सामने सभी दृश्य पुनः आ रहे हैं जिन्हें उसने अपनी अभावग्रस्त जिंदगी में जिया है। किंतु इनका क्रम अनिश्चित है। वह बचपन को याद करता है फिर अगले ही पल वह मां की गोद में सो रहा है तो फिर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

गोबर का चेहरा सामने आ गया है। अचानक उसकी पत्नी धनिया उसे दुल्हन बनी दिख रही है जिसने लाल चुनरी पहन रखी है। उसे गाय का चित्र भी दिख रहा है जैसे कामधेनु हो।

विशेष - ① अभावग्रस्त जीवन जीते हुये होरी की मौत भारतीय किसान की मौत है जो आज भी प्रासंगिक है जहाँ निरंतर कृषक आत्महत्याएँ कर रहे हैं।

② प्रेमचंद ने अपनी अन्य रचनाओं जैसे 'पूस की रात' एवं कर्मभूमि में भी किसान समस्या को दिखाया है।

③ संवेदना की सूक्ष्मता के स्तर पर ~~यह~~ दृश्य हिन्दी साहित्य में प्रमुख है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) आर्य ! जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश यशपाल द्वारा रचित उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है।

प्रसंग -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे जबान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश धर्मवीर भारती द्वारा रचित कहानी 'गुलकी बन्नो' का है, इसका संकलन 'एक दुनिया समानांतर' में किया गया है।

प्रसंग- नारी की असहाय एवं शोषित स्थिति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- गुलकी बन्नो को उसके पति ने छोड़ दिया था फिर जब उसकी दूसरी पत्नी का बच्चा हुआ तो काम करने के लिये एक महिला की जरूरत हुई तब वह गुलकी को लेने आया। किंतु वह फिर भी उसे समान दर्जा नहीं देना चाहता है एवं दासी बनाकर ले जाने के लिया आया है। उसका पति मानो उस पर एहसान कर रहा हो। दरअसल यह गुलकी की असहाय स्थिति के कारण था

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

क्योंकि इसे पी० में डूबा था।

विशेष-

① नई कहानी प्रायः मध्यवर्गीय जीवन से संबंधित होती हैं किंतु इसमें महिला की दयनीय स्थिति का वर्णन किया गया है।

② यथार्थपूर्ण अभिव्यक्ति के माध्यम से चित्रण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

संदर्भ- प्रस्तुत गद्यांश यशपाल द्वारा रचित ऐतिहासिक उपन्यास 'दिव्या' से अवतरित है।

प्रसंग- दिव्या के प्रेम में पड़ने पर

व्याख्या- पिता अपने पुत्र को समझाते हुये कह रहा है कि मैंने संपूर्ण जीवन प्रयत्न एवं परिश्रम से इस ख्याति के लायक तुम्हें बनाया था परंतु तुम एक स्त्री के प्रेम में आकर इस अवसर को गँवाना चाहते हो। स्त्री भोग्य वस्तु है अतः उसे साध्य नहीं बनाना चाहिये अगर तुम ऐसे ही सोचते रहे तो तुम्हारा पतन निश्चित है।

विशेष- (1) स्त्री को भोग्य वस्तु समझना तात्कालीन समाज की मानसिकता का परिचायक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(2) संस्कृतनिष्ठ तत्सम भाषा का प्रयोग

(3) स्त्री की दयनीय स्थिति को व्यक्त किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

संदर्भ-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपने निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' में रामविलास शर्मा ने तुलसी के काव्य का पुनर्पाठ किया है। मार्क्सवादी समीक्षक रामविलास शर्मा ने तुलसी के रचनाकौशल की प्रशंसा करते हुये तत्कालीन परिस्थितियों के आलोक में उनकी समीक्षा की है।

रामविलास शर्मा कहते हैं कि यह सच है कि तुलसी का नजरिया ब्राह्मणवादी दिखाई देता है किंतु यह सामाजिक दबाव से उत्पन्न हुआ है। वस्तुतः उनका एक पैर रूढ़िवादिता में तो एक पैर प्रगतिवादिता में दिखता है।

तुलसी ने तत्कालीन पंडितों के पाखंड एवं आडंबर की आलोचना की एवं ~~लिखा है कि~~ ~~उनको~~
लिखा है कि –

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"विप्र निरच्छर लोलुप कामी,
निराचार सठ बृषली स्वामी।"

तुलसी ने सामंती राजाओं की मानसिकता पर चोट की और राजाओं को जनता के कल्याण करने की सीख दी। उन्होंने कहा कि यदि राजा जनता की सेवा नहीं करते तो उन्हें नर्क भुगतना होगा।

-"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवस नर्क अधिकारी।"

तुलसी ने रामराज्य की अवधारणा प्रस्तुत की जहाँ दैहिक, दैविक, भौतिक किसी भी प्रकार का ताप प्रजा को नहीं होता है एवं सब स्वधर्म का पालन करते हैं।

स्वयं तुलसी महिलाओं की पराधीनता के लिये दुखी दिखाई देते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है -

"कति विधि सृजी नारी जग माहीं
पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं।"

तुलसी की प्रगतिशीलता की चेतना जाति, गरीबी, बेरोजगारी के प्रति कवितावली के उत्तरकांड में अभिव्यक्त होती है। वे खुद को 'माँगि के खैबो' एवं 'मसीत को सोइबो' वाला बताते हैं तथा गरीबी के प्रति चिंता व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार राम विलास शर्मा ने तुलसी के साहित्य में सामंत विरोधी मूल्यों की स्थापना की है। कुछ आलोचकों के अनुसार तुलसी की नारी दृष्टि एवं जाति दृष्टि प्रश्नगत है किंतु फिर भी तुलसी का काव्य हिन्दी साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को एक झटके में शैशवावस्था से परिपक्वता तक पहुँचाया। उसके पीछे उनका समग्र दृष्टिकोण था। चाहे दलित समस्या हो या वृद्ध समस्या। प्रेमचंद्र ने हर जगह अपनी लेखनी चलाई है।

वैसे तो सद्गति के अलावा 'दूध का दाम', गुल्ली डंडा, कफन में भी दलित केन्द्र में हैं किंतु सद्गति में यह तीव्रता ऊँचे स्तर की है।

दलित प्रश्न को उठाने में 'सद्गति' पूरी तरह से खड़ी नजर आती है। प्रेमचंद ने कहानी में अनेक पक्षों के माध्यम से इसकी संवेदना प्रकट की है, जैसे -

(क) लगातार शोषण युक्त जीवन जीने से दलित समाज अब चेतना में भी स्वयं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को नीचा समझने लगा है। 'दुखी' जब पंडित घासीराम के घर में घुस जाता है तो सोचता है -

-"बड़े पवित्तर होते हैं ये लोग। तभी तो सारा संसार पूजता है इन लोगों को।"

(ख) दलित समाज अपने शोषण के पीछे निहित शोषणमूलक चेतना को नहीं समझता एवं अपने कर्मों को इसके पीछे का कारण मानता है। 'दुखी' को जब पंडिताइन अग्नि से जला देती है तो वह इसे अपने कर्मों का फल मानता है।

(ग) यह 1930 के दौर की रचना है, इस समय तक अंबेडकर दलितों को जगाने का कार्य शुरू कर चुके थे। अत: सद्गति में भी दलितों के मन मे दुखी की मौत के कारण क्रांति के दबे हुये स्वर दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिये -

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

– " इधर गौड़ ने चमरौने में जाकर सबसे कह दिया - खबरदार! कोई लाश नहीं उठायेगा ----- पंडित होंगे तो अपने घरके।"

सद्गति के माध्यम से प्रेमचंद ने दलित समस्या के प्रति सूक्ष्म एवं गहरे स्तर पर संवेदना प्रकट की है। इसके अलावा उनके उपन्यास गोदान में भी उनकी यह दृष्टि दिखती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भले ही सद्गति में दलितों का तीव्र आक्रोश नजर न आता हो किंतु दलितों की समस्या का पहली बार विशद् वर्णन प्रेमचंद ने ही किया था।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त प्रसाद का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक नाटक ~~उपन्यास~~ है। इसके नामकरण के पीछे विभिन्न कसौटी हो सकती हैं, जिन आधारों पर किसी रचना का नामकरण होना चाहिये।

सबसे पहले नामकरण में उपन्यास का प्रतिपाद्य स्पष्ट होना चाहिये एवं दूसरा वह नाम संवेदना के अनुरूप हो। इन कसौटियों के आधार पर हम स्कंदगुप्त नामकरण की सार्थकता पर विचार कर सकते हैं –

(क) 'स्कंदगुप्त' नाटक में प्रसाद ने इतिहास की महत्वपूर्ण घटना का उपयोग करते हुये आधुनिक जीवन की समस्या को उभारा है। चूँकि स्कंदगुप्त इतिहास में प्रसिद्ध है एवं उसने हूणों को पराजित भी किया था अतः इससे चरित्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की महत्वता स्पष्ट होती है।

(ख) चूँकि यह चरित्र प्रधान नाटक है, इसके पहले प्रसाद को हिन्दी परंपरा में उद्देश्य प्रधान नाटक मिले थे। अतः चरित्र प्रधान नाटक का नामकरण उन्होंने मुख्य नायक के चरित्र के नाम पर किया जो उचित है।

(ग) यदि 'स्कंदगुप्त' नाम न होता तो 'देवसेना' हो सकता था किंतु इसमें शक्ति का गुण नहीं आता, इसके अलावा घटना प्रधान नाम उपयुक्त प्रतीत नहीं होता।

अतः 'स्कंदगुप्त' नाम रचना के प्रतिपाद्य को पूर्णतः सिद्ध करता है इस आधार पर 'स्कंदगुप्त' का नामकरण उचित है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation